



देव संस्कृति
विश्वविद्यालय

www.dsvv.acin

प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः?

“अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्,
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः”

अक्षर ब्रह्म योग

अधिभूत ब्रह्म अधिदैव
कर्म अध्यात्म अधियज्ञ
अधिभूत अन्त में भगवान् अन्त में भगवान् ब्रह्म
अधियज्ञ अधिदैव कर्म अध्यात्म अधिभूत कर्म
अन्त में भगवान् ब्रह्म अधिदैव अधियज्ञ
अध्यात्म अधियज्ञ

गीतामृतं

शारदीय नवरात्र

21 से 29 सितम्बर 2017

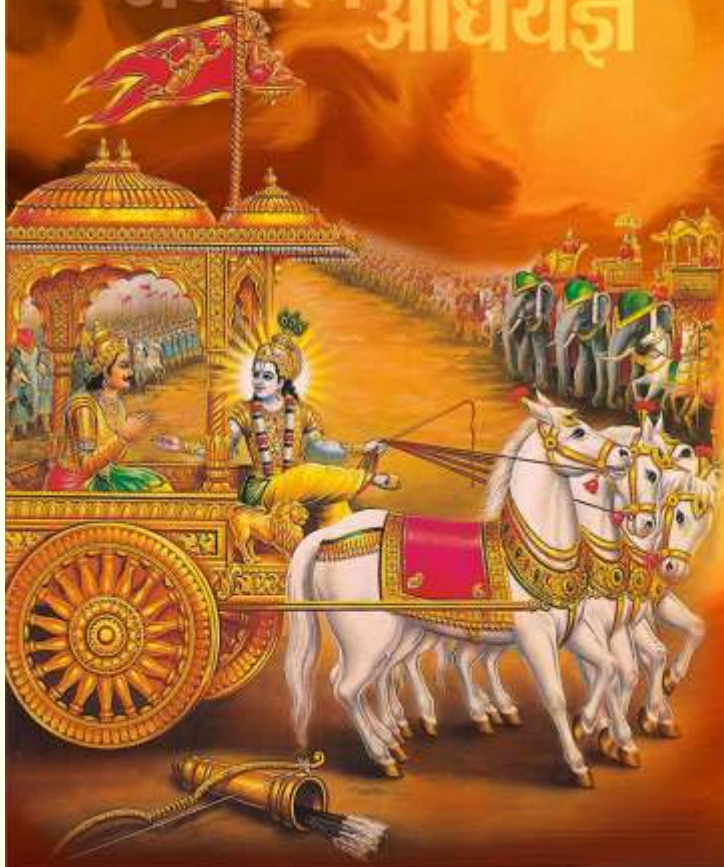
नवरात्रि अष्टम दिवस

28/09/2017

विशेष उद्बोधन-

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या

कुलाधिपति, देव संस्कृति विश्वविद्यालय



विषय - अक्षर ब्रम्ह योग । (8^{वां} अध्याय - श्री कृष्ण द्वारा अर्जुन के पूछे सात प्रश्नों के उत्तर)

नवरात्र अष्टम दिवस: सप्तम प्रश्न - प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः? (8/2)

उत्तर - “अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्, यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः” । (8/4)

- आठवां दिन, सप्तम प्रश्न- अंतकाले किं स्मरामि । ?

श्लोक(8/2)- अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन। “प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः”॥

भावार्थ - हे मधुसूदन! यहाँ अधियज्ञ कौन है? और वह इस शरीर में कैसे है? तथा युक्त चित्त वाले पुरुषों द्वारा अंत समय में आप किस प्रकार जानने में आते हैं॥8/2॥

श्लोक - “अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्। यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः”॥

भावार्थ - जो पुरुष अंतकाल में भी मुझको ही स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह मेरे साक्षात् स्वरूप को प्राप्त होता है- इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥8/5॥

- हमें लगता है कि जीवन ही जीने की चीज है पर मृत्यु भी एक ऐसी चीज है जिसको हमें समझना चाहिए ।
- भगवान कृष्ण कहते हैं मैं मृत्यु सिखाता हूँ। मृत्यु क्या होती है? इसको अच्छे से समझ लिया तो दिक्कत नहीं आएगी रोज जिओगे रोज मरोगे। हर दिन नया जन्म हर रात नई मौत उस कॉन्सेप्ट के आधार पर। इसी कॉन्सेप्ट के आधार पर यह 8 दिन की कक्षाएं हुई। 8 अलग-अलग विषयों पर हमने जो चर्चा कि वह हमारे लिए बहुत उपयोगी होगा।
- आज का विषय है- "प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः॥" - युक्त चित्त वाले पुरुषों द्वारा अंत समय में आप किस प्रकार जानने में आते हैं।
- आज आठवां दिन है – आज महागौरी जी का पूजन करते हैं। आज का दिन नारी शक्ति के संरक्षण का दिन है। चित्त में शुद्ध सात्विकता का उदय महागौरी का प्रतीक है। माता पार्वती जब गंगा जल में स्नान करके निकलती तब उनका जो स्वरूप है वह रूप उजला है। वह जो स्नान है चेतना का सुषुम्ना में स्नान है। समस्त कल्मषों को पार करा जाती है। श्वेत वर्ण, शुभ वर्ण, मात्र प्रकाश ही प्रकाश समस्त ओर। कहीं कोई गन्दगी नहीं, कहीं कोई मैलापन नहीं। चित्त बिलकुल साफ़। वृषभ में सवार होती हैं, समाधि को ओर लेजाती हैं। जीवनमुक्त साधक हैं।
- साधना की पूर्णता में जो संस्कार बीच में है उसे गिरना चाहिए, वह संस्कार गिरते ही सिद्धिदात्री बन जाती हैं। अंतिम शिखर, पूर्णता में स्थित, कैवल्य में स्थित – सिद्धिदात्री। जो समस्त कामनाओं को पूर्ण कर देती है, कामनाओं की भूख को समाप्त कर देती है। लौकिक अध्यात्मिक रूप से योगेश्वर है। यहाँ पर सब समाप्त अंतिम गांठें खुल जाती है और सिद्धिदात्री के रूप में नौवें दिन दुर्गा का जागरण होता है। हमारी संस्कृति में नव दुर्गा का बड़ा महत्व है नवरात्रि के दिनों में। हम जितना ज्यादा देवी से जुड़ सकें, परमात्मा से जुड़ सकें अन्तकाल में उनको स्मरण करते हुए उनको ही प्राप्त होंगे।
- गीत - हमें भक्ति दो मां हमें शक्ति दो मां सतत साधना की तपन मांगते हैं...



विद्यार्थियों की जिज्ञासाएं एवं समाधान की मुख्य बातें- –

- नाद योग के माध्यम से संपूर्ण ब्रम्हाण्ड को लाभ मिलता है। संसार तरंगों का समाचार है जब नादयोग करते हैं तो संसार की तरंगे प्रभावित होती है जिससे सबको लाभ मिलता है, मनोविकार दूर होते हैं। कई तरह की प्रक्रियाएं परिवर्तित होती है जो हमारे लिए फायदेमंद होती है।
- **दुर्गा सप्तसती साधना विधि -**
9 दिन की साधना हेतु अध्यायों का पाठ
पहला दिन - कवच किलक पाठ। दूसरा दिन - अध्याय 2 और 3 तीसरा दिन - अध्याय 4
चौथा दिन - अध्याय 1 पांचवा दिन - अध्याय 5,6,7,8 छठवां दिन - अध्याय 9 और 10
सांतवां दिन - अध्याय 11 आठवां दिन - अध्याय 12 और 13
नौवां दिन - रहस्य और सूक्तं।
7 दिन की साधना हेतु अध्यायों का पाठ
पहला दिन - अध्याय 1 दूसरा दिन - अध्याय 2 और 3 तीसरा दिन - अध्याय 4
चौथा दिन - अध्याय 5,6,7,8 पांचवा दिन - अध्याय 9 और 10 छठवां दिन - अध्याय 11
सांतवां दिन - अध्याय 12 और 13।
- इसके अलावा सप्त श्लोकी दुर्गा का पाठ(पहले शिव उवाच, देवी उवाच, उसके बाद सप्त श्लोकी दुर्गा), एकादश अध्याय का पाठ (रोग एवम परेशानी मुक्तिबके लिए)
- चंदन जिस स्थान पर हम लगाते हैं वह स्थान आज्ञा चक्र का है।
- ज्ञान - जो हमारे अंतर्जगत में स्थापित होता है, प्रकाशित करता है। विवेक - Discriminative Wisdom
- अभिशाप्त - जो सार्थक नहीं होगा।
- Geeta is the text book of day to day life. Geeta teach us How to live Life.
- ज्ञान का कभी क्षरण नहीं होता। ज्ञान अमृत के समान है।

विषय वस्तु सार-

- आज अंतिम प्रश्न इससे पहले 7 प्रश्नों की चर्चा 7 दिनों में किये।
- **प्रथम दिवस** - भूमिका (अध्याय 8 अक्षर ब्रम्ह योग)
- **द्वितीय दिवस** - किं तद्ब्रह्म? (8/1), अक्षरं ब्रह्म परमं। (8/3)
यह "ब्रह्म" क्या है? परम अक्षर 'ब्रह्म' है।
- **तृतीय दिवस** - किमध्यात्मं?(8/1), स्वभावोऽध्यात्ममुच्यते। (8/3)
"अध्यात्म" क्या है? अपना स्वरूप अर्थात् जीवात्मा 'अध्यात्म' नाम से कहा जाता है।
- **चतुर्थ दिवस** - किं कर्म?(8/1), भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः। (8/3)
"कर्म" क्या है? भूतों के भाव को उत्पन्न करने वाला जो त्याग है, वह 'कर्म' नाम से कहा गया है।
- **पंचम दिवस** - अधिभूतं च किं?(8/1), अधिभूतं क्षरो भावः। (8/4)
"अधिभूत" किसे कहते हैं? उत्पत्ति-विनाश धर्म वाले सब पदार्थ अधिभूत हैं,
- **षष्ठम दिवस** - प्रोक्तमधिदैवं किमुच्यते?(8/1), पुरुषश्चाधिदैवतम्। (8/4)
"अधिदैव" कौन कहलाते हैं? हिरण्यमय पुरुष (जिसको शास्त्रों में सूत्रात्मा, हिरण्यगर्भ, प्रजापति, ब्रह्मा इत्यादि नामों से कहा गया है) अधिदैव है।

- **सप्तम दिवस** - अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन्मधुसूदन?(8/2), अधियज्ञोऽहमेवात्र देहे देहभृतां वर । (8/4)
यहाँ "अधियज्ञ" कौन है? और वह इस शरीर में किस प्रकार स्थित रहता है? और हे देहधारियों में श्रेष्ठ अर्जुन! इस शरीर में मैं वासुदेव ही अन्तर्यामी रूप से अधियज्ञ हूँ।
- **अष्टम दिवस** - प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः?(8/2), अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् । यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः । (8/5)
शरीर के अन्त समय में आत्म-संयमी (योग-युक्त) मनुष्यों द्वारा आपको किस प्रकार जाना जाता है? , जो पुरुष अंतकाल में भी मुझको ही स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह मेरे साक्षात स्वरूप को प्राप्त होता है- इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥
- भगवान उत्तर देते हैं -
श्लोक -अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम् । यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः ॥
भावार्थ - जो पुरुष अंतकाल में भी मुझको ही स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह मेरे साक्षात स्वरूप को प्राप्त होता है- इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥8/5॥
- **भगवान को प्राप्त होना मतलब मोक्ष को प्राप्त होना ।**
- **मृत्यु जीवन का निष्कर्ष जीवन का लास्ट पॉइंट है मृत्यु(death).**
- जिस तरह से वर्तमान जन्म, हमारे पिछले कर्मों का लेखा जोखा है, प्रारब्ध कर्मों का लेखा जोखा है वैसे ही मृत्यु भी हमारे जीवन की गवाही देता है कि हमने कैसा जीवन जिया ।
- **जीवन का उपसंहार है मृत्यु । लेकिन हम सब इस बात की परवाह नहीं करते हम मृत्यु का सामना नहीं करना चाहते अधिकांश लोग मृत्यु से डरते हैं कतराते हैं उसकी चर्चा करने से डरते हैं कहते हैं क्या मृत्यु की चर्चा कर रहे हो? जीवन तो जीने के लिए । जीवन जीने के लिए मना नहीं किया गया परंतु जीवन को जियो तो ऐसे जियो कि वह आखिरी हो ।**
- **अपना हर दिन ऐसे जियो जैसे कि आखिरी हो ।**
- **मृत्यु की प्रतीक्षा करो, मृत्यु को जानो मृत्यु को समझो ।**
- ऐसा कोई भी प्राणी, कोई भी वस्तु कोई भी घटना क्रम नहीं जिसका अंत ना हो । कितना भी प्रयास करें लेकिन अंत हो ही जाता है ।
- जीवन जीने की कला जितनी महत्वपूर्ण है, मृत्यु की कला भी उतनी ही महत्वपूर्ण है ।
- मरते सभी हैं ऐसा नहीं है कि कोई नहीं मरता हो । लेकिन मरते समय की मनः स्थिति, मरते समय का भाव, मरते समय का विचार और मृत्यु के काल में हमारी चेतना की दशा(State of Consciousness that matters a lot.) बहुत महत्वपूर्ण है ।
- हम किन भावों के साथ शरीर छोड़ रहे हैं, हमारे भाव क्या हैं? हमारे विचार क्या हैं? हमारे कर्म क्या है? यह महत्वपूर्ण हैं ।
- जब एक मरीज हॉस्पिटल में ICU में रहता है तो उसकी मनः स्थिति ऐसी होती है कि डॉक्टर से बोलता है कि मैं बच तो जाऊंगा न, ठीक तो हो जाऊंगा न । कोई भी मरीज मरना नहीं चाहता । और कुछ लोग ऐसे होते हैं जो मरना चाहते हैं और चाहते हैं कि सुखद हो मृत्यु ।
- जैसे कुछ लोग चाहते हैं कि उनकी मृत्यु सुखद हो हॉस्पिटल में न हो, घर पर हो शांति से हो , ये नहीं चाहते कि आखिरी क्षणों में हॉस्पिटल में उनपर तरह तरह के मशीन इंजेक्शन लगे हों । (डॉक्टर प्रणव पंड्या जी की मां की मृत्यु जैसा उन्होंने चाहा वैसे ही हुई घर पर ही हुई उनकी मृत्यु हॉस्पिटल में नहीं ।)
- यह जानना जरूरी है कि हम क्या है? व्यक्ति क्या है?
- हॉस्पिटल्स में रोगी परेशान रहता है कि क्या होगा? क्या होगा? इतनी सारी दवाइयां चल रहीं हैं । क्या? ठीक हो जाऊंगा मैं? बहुत ज्यादा एक निगेटिव सा माहौल होता ।

- इसलिए यह बड़ा महत्वपूर्ण है कि हम मृत्यु के बारे में सीखें और सिखाएं कि मृत्यु क्या होती है?
- मृत्यु अनिवार्य सत्य है, ध्रुव अटल सत्य है। इसलिए कोई चिंता नहीं करनी चाहिए क्योंकि मृत्यु तो होकर रहेगी सबकी होगी।
- वेदों में ज्ञानियों ने इसकी बड़ी गहन चर्चा की है। अगर कहें कि मृत्यु हमारी सबसे बड़ी सफलता है और सबसे बड़ी विफलता है तो कोई आश्चर्य नहीं।
- हमारे भविष्य का निर्धारण मृत्यु करती है कि अब आगे कहाँ जायेंगे।
- अर्जुन अपने अंतिम प्रश्न में यही पूछता है - प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः?(8/2), अंतकाले च मामेव स्मरन्मुक्त्वा कलेवरम्। यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्यत्र संशयः। (8/5)
- शरीर के अन्त समय में आत्म-संयमी (योग-युक्त) मनुष्यों द्वारा आपको किस प्रकार जाना जाता है?, जो पुरुष अंतकाल में भी मुझको ही स्मरण करता हुआ शरीर को त्याग कर जाता है, वह मेरे साक्षात् स्वरूप को प्राप्त होता है- इसमें कुछ भी संशय नहीं है ॥
- हम उनकी बात नहीं कर रहे हैं जो आलस्य में जीवन जी रहे हैं जो स्वार्थ में जीवन जी रहे हैं। हम उनकी बात कर रहे हैं जो नियतात्मभिः(योग-युक्त चित्त वाले पुरुषों के द्वारा)। जिनकी योगी जैसी मानस हो गई है जिन्होंने अपने आप को नियंत्रण कर लिया है जो अपनी कामना वासना में नियंत्रण कर लिए हैं।
- पांच प्रकार की योनियां हैं - नर किटक, नर पशु, नर पिशाच, नर मानव, देव मानव। जो विचारवान नहीं है उनकी बात नहीं कर रहे बल्कि जो विचार वान हैं जिसके जीव का न कोई उद्देश्य है, विवेक जिनके पास और अपने मन को नियंत्रण करने के लिए जिन्होंने कोशिश की है उनको स्मरण होता है।।
- मरण और स्मरण दो कलाएं हैं। स्मरण - स्मरण के लिए साधु ने, संतो ने, भक्तों ने एक शब्द कहा है - सुरति(सु मतलब अच्छा + रति मतलब लगन)
- कबीरदास जी कहते हैं - मन लागो मेरो यार फकीरी में। जो सुख पावो राम भजन में, सो सुख नाही अमीरी में ॥ मन लागो मेरो यार फकीरी में।
- किसी का मन अमीरी में लगता है पर कबीरदास जी मन फकीरी में लगता है।
- मीरा कहती हैं - कर न फकीरी फिर क्या दिलगीरी, सदा मगन में रहना जी....
- कोई दिन हाथी न कोई दिन घोडा, कोई दिन पैदल चलना जी....।
- सुरति मतलब मन कहाँ लगा है आपका। बार-बार आपके मन का खिंचाव किस तरफ होता है। भौतिक आकर्षण या थोड़ा परमात्मा भी खींचता है आपको। मन कहां कहां लगा है आपका इस पर बहुत ध्यान देना पड़ेगा।
- रामकृष्ण परमहंस जी उदाहरण देते हैं नेवले का। गांव में एक खेल खेलते हैं नेवले की पूंछ में एक कंकड़ बांध देते हैं फिर नेवले को भगाते हैं नेवला भागता है अपने बिल में। अब नेवला बिल में जाता है पर कंकड़ की वजह से पूरा नहीं जा पाता तो वहां अंदर ही अंदर कुलबुलाता रहता है फिर वापस आता है फिर बच्चे उसके साथ खेलते हैं बच्चे फिर भगाते हैं। फिर जाता है बिल के पास पर पूरा नहीं जा पाता क्योंकि कंकड़ बंध हुआ है पीछे।
- हमारा मन कहीं ना कहीं अटकता रहता है भटकता रहता है जैसे नेवले का शरीर अटक गया ऐसा ही हमारा मन भी अटक जाता है। मन भगवान में लग गया राम में लग गया तो कल्याण हो गया।
- भरत की तपस्या का जब वर्णन करते हैं तुलसीदास जी, तब तुलसीदास जी कहते हैं - नित नव चरन उपज अनुरागा। बिसरी देह तपहिं मनु लागाम्॥ संबत सहस मूल फल खाए। सागु खाइ सत बरष गवाँए॥2॥ (बालकाण्ड, दोहा 72 के बाद 2रा चौपाई)
- भावार्थ - स्वामी के चरणों में नित्य नया अनुराग उत्पन्न होने लगा और तप में ऐसा मन लगा कि शरीर की सारी सुध बिसर गई। एक हजार वर्ष तक उन्होंने मूल और फल खाए, फिर सौ वर्ष साग खाकर बिताए॥2॥
- भरत का तप में मन का लगना और श्री राम के चरणों में अनुराग।

- प्रयाणकाल में हमारा मन भटकता रहता है, इन्द्रियाँ शिथिल हो जाती है, शरीर को कष्ट होता है। कष्ट बार-बार मन को दुखी करता है।
- भगवान श्री कृष्ण कहते हैं -
श्लोक - यं यं वापि स्मरन्भावं त्यजत्यन्ते कलेवरम् ।
 तं तमेवैति कौन्तेय "सदा तद्भावभावितः"॥
भावार्थ - हे कुन्ती पुत्र अर्जुन! यह मनुष्य अंतकाल में जिस-जिस भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर त्याग करता है, उस-उसको ही प्राप्त होता है क्योंकि वह "सदा उसी भाव से भावित रहा है" ॥8/6॥
- **सदा परमात्म भाव में जीना ।**
- हम तप करते हैं, व्रत-उपवास करते हैं लेकिन तुलसीदास जी कहते हैं बिसरी देह तपहिं मनु लागा॥ तप ऐसा हो कि देह को भूल जाये और परमात्मा याद रहे ।
- सबसे ज्यादा हमें हमारी देह याद आती है। देह को भूलना ऐसी अवस्था ।
- जिनको फांसी दी जाती है उनको पूछा जाता है कि अंतिम इच्छा तुम्हारी क्या है? अंतिम इच्छा सबको पूछी जाती है ।
- Story - एक आदमी मरा एक गांव में। जब मरने वाला होगा तब लोगों ने पूछा - अंतकाल में तेरी इच्छा क्या है? तुम मरने वाले हो ? तो मरते समय तुम क्या चाहते हो। लोगों ने बार-बार पूछा कि कुछ इच्छा हो तेरी तो बता दे - तो उसने कहा रसगुल्ला मंगा दो। रसगुल्ला मंगवाया, और लाया गया तब तक जब तक के उसके प्राण नहीं निकले। रसगुल्ला जैसे ही खाया उसके प्राण छूट गए। रसगुल्ला कहा के ही मरा वह आदमी अब उसकी अंतिम गति क्या होगी कि वह जहां भी होगा खाते ही होगा क्योंकि खाते-खाते गया ।
- भगवान गीता में कहते हैं प्रयाणकाल बहुत महत्वपूर्ण है। पर लोगों का मन - अंतकाल में मन अटके रहता है बेटी में बेटा में रिश्तेदारी में। प्रयाणकाल जीवन का बहुत महत्वपूर्ण क्षण है। बहुत ही परिष्कार करने वाला क्षण हैं यह। जैसे सारी परीक्षाओं की तैयारी की जाती है वैसे ही इसकी भी परीक्षा की तैयारी करनी चाहिए।।
- इस परीक्षा की रोज तैयारी करनी चाहिए। हर दिन नया जीवन, हर रात नई मौत
- गुरुदेव कहते हैं हर दिन प्रातःकाल नया जन्म, हर रात सोते समय नई मौत ।
- **आत्मबोध और तत्वबोध साधना का रोज अभ्यास ।**
- **आत्मबोध** - Prayer to God and Say thanks for New Day, New Life, New Beginning and Self Planning/Day Planning/do's and don'ts).
तत्वबोध -Say thanks for whole day and dedicate the day to god's feet (whatever you have done on that day) and Self Analysis - Right/Wrong things etc. Say thanks for Good and Right, Sorry for Bad and wrong with taking pledge to correct the wrong things within you.
- कई घटनाएं ऐसी हैं जो बताती हैं कि महापुरुषों का अंतकाल कैसा था, अंतकाल में उनके विचार, उनके भाव कितने सशक्त रहे, समर्थ रहे ।
- मां शारदा थी अपने घर-परिवार में रहती थी। जयरामबाटी(बंगाल) में उनका घर था। वेल्लूरमठ वालों ने उनके लिए एक भवन बना दिया था कलकत्ता में। स्वामी शारदानंद जी(जिन्होंने रामकृष्ण लीलामृत लिखी) नीचे रहते थे और ऊपर श्रीमाँ शारदा रहती थी। उनकी मृत्यु 20 जुलाई 1920 (उम्र 66) कोलकाता में हुई। जब रामकृष्ण परमहंस शरीर छोड़े तो उनका उचड़ गया। मन में वैराग्य हो गया। मन में आया कि सब बेकार है, नहीं रहना, वैराग्य मन में पैदा हो गया था। तो लोगों ने कहा भक्तों ने कहा जो वहां रहते थे कि इनका मन किसी में लगा दो। तो उनके भाई की एक लड़की थी राधू नाम की। राधू उनकी देखभाल करती रही तो राधू में उनका मन लगने लग गया धीरे-धीरे। राधू में मन लग गया तो फिर धीरे धीरे लौकिक में भी मन लग गया। जब स्वामी जी लोग जाते थे मिलने तो उनका हाल चाल पूछती थी, उनकी तबीयत पूछती थी, मिठाई खिलाती थी। श्री माँ राधू को बहुत मानती थीं।

एक समय आया जब वह बीमार पड़ी। बीमार पड़ी तो मठ लोगों ने अनुष्ठान करवाये काफी सारे कि वह स्वस्थ हो सके। रुद्राभिषेक कराया, महामृत्युन्वज कराया। अभिषेक के लिए बहुत सारे घड़े लाये गए थे। पर वह शरीर छोड़ने का संकल्प ले चुकी थीं। और इसलिए जब अभिषेक करने के लिए घड़े उठाये जाते थे लिए जाते थे तो वह घड़े वहीं के वहीं फुट जाते थे। ये एक अलौकिक घटना है। सौ घड़े फुटे, पंडितों की, विद्वानों की आवाज लड़खड़ा गयी उन्होंने कहा मंत्र नहीं निकल पा रहे हमारे मुख से, मन बना लिया है माँ ने जाने का, अब छोड़ दो ये आयोजन। राधू की बड़ी फिक्र करती थी, उसको बुलाया गया अंतिम समय में उनके पास, वो बोली कौन राधू, मैं नहीं जानती। लौकिक समय चला गया था अब ये परमात्मा का समय आ गया। वो अपने आराध्य ठाकुर से मिलना चाहती थीं। अंत समय में अपने मन को उन्होंने स्थिर कर लिया शांत होकर बोलीं - मेरा मन संसार से ऊपर उठ गया है संसार छोड़ दिया है मैंने। मेरा मन ठाकुर में है। इसके बाद उन्होंने कुछ नहीं बोला। ये अंत समय था, अंतिम वाक्य थे उनके।

- परम पूज्य गुरुदेव आखिरी समय तक निर्देश देते रहे, जब शरीर छोड़ा उन्होंने तबतक निर्देश देते रहे। उन्होंने माता जी को निर्देश दिए। जब माताजी लेक्चर में जा रही थी तब माताजी के जाने से पहले कहा कि आज मैं शरीर छोड़ दूंगा। इसके अलावा और भी बातें बतायीं आयोजन संबंधी बातें आदि। जो उस समय मौजूद थे वहां, उनको माता जी के संदर्भ में कहा कि 4 साल माता जी रहेंगी उसके बाद चली जाएंगी इसलिए तुम लोग परेशान मत होना तुम लोग अपने आप को मजबूत बनाना। स्पष्ट संदेश सुनाने दिया था। और जब माताजी ने भी शरीर छोड़ा उससे पहले 5 मिनट तक बोलती रहीं, बताती रहीं क्या करना है-क्या करना है? उसकी बाद फिर माताजी ने भी शरीर छोड़ दिया था।
- प्रयाणकाल का एक और उदाहरण हैं स्वामी विवेकानंद जी का। स्वामी विवेकानंद जी बीमार थे। दो वर्ष उनके बीमारी की तकलीफ में गुजरे। वह कभी भी शरीर छोड़ सकते थे पर उन्होंने बीमारी की तकलीफ में दिन गुजारे। जिस दिन उन्होंने शरीर छोड़ा उस दिन उन्होंने कक्षा ली और जो भी संयासी, ब्राम्हण वहां रहते थे उनको वेदांत पढ़ाया। गंगा जी किनारे टहले। पंचांग मंगा कर उन्होंने तिथि देखी कि कौन सा पावन दिन है शरीर छोड़ने के लिए। जब वह दिन आया 4 जुलाई का दिन आया तो उन्होंने कहा आज मेरी प्रसन्नता का दिन है। शीशा निवेदिता को उन्होंने पत्र लिखा कि अब ठाकुर का बुलावा आगे हैं तो हम एक लंबी यात्रा में जा रहे हैं। यह चिट्ठी उनको तब मिली जब विवेकानंद जी जा चुके थे। सभी शिष्यों को बुलाया, जिनको दीक्षा दी उनको भी बुलाया खाना खिलाया उनके बर्तन भी धोये। शिष्यों ने कहा आप इतनी सेवा क्यों कर रहे हैं तो बोले इससे क्या हुआ? तुम मेरे शिष्य हो। इन सबके के बाद में विश्राम करने गए। जो उनका सेवक था सेवा करता था उसको बुलाया कहा कि हम विश्राम करने जा रहे हैं फिर अपने बिस्तर में बैठे जप किये। स्वामी विवेकानंद जी कभी बिस्तर में बैठकर जप नहीं करते थे, जप करते थे आसन में बैठ कर। पर उसदिन बिस्तर में बैठकर जप किये 5 माला की फिर ब्रम्हचारी सेवक को बुलाया और अपनी माला और पाठ की किताब उसको दे दी और कहा कि तुम इससे माला और पाठ करना। अब हम थक गए हैं तुम बाहर बैठो बाद में थोड़ी देर बाद आजाना और फिर सबको खबर कर देना। अंदर से आवाज आरही थी ॐ कि। उन्होंने अपनी भौहें ऊपर की आज्ञा चक्र पर ध्यान लगाया और ॐ का उच्चारण किया। ॐकार का गुंजन करते - करते एकदम ओंकार बंद हो गया। उसी समय, उसी क्षण उनका शरीर सहस्रार की तरफ से छूट गया। फिर सेवक अंदर गया देखा तो उनको शांत देखा स्वामी जी को समाधि में जाने का अभ्यास था। फिर चिकित्सकों को बुलाया, चिकित्सकों ने देखा और कहा कि समाधि में नहीं गए ब्रेन हमरेज हुआ है दिमाग के नस फट गए हैं। इन्होंने शरीर कपाल से छोड़ा है।
- दिव्य पुरुषों का प्रयाण उनका जाना ऐसा होता है।
- दिव्य पुरुष किसी को बताकर नहीं जाते, अपनेआप चुपचाप चले जाते हैं।
- दिव्य पुरुष मरने से पहले संकेत करना चालू कर देते हैं।
- जॉर्ज वेनोविच गुरजिएफ(1866 to 1949) आर्मेनिया का था। आध्यात्मिक व्यक्ति थे। विचित्र गुरु थे बहुत कुछ सिखाया अपने शिष्यों को। इनकी तुलना करनी है तो कबीर जी से कर सकते हैं। वो कहते थे मैं मृत्यु सिखाता हूँ। मैं सिखाता हूँ मरना कैसे चाहिए जबकि लोग जीने की कला सिखाते हैं। दर्शियम ऑर्गेनम उनकी प्रसिद्ध किताब है। आस्पेंस्की उनके शिष्य थे। वे पूछते हैं इतने अच्छे आदमी है शिष्यों को बहुत कुछ सिखाते है बहुत ध्यान रखते हैं, उनकी चेतना की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहते हैं पर गाली देके भगा क्यों देते हैं आप शिष्यों को। बोले मैं कंकड़ों में हीरे चुनता हूँ। हीरे होते हैं उनको रख लेता हूँ और कंकड़ों को

फेंक देता हूँ। जो राह जाते हैं वह हीरे हैं और जो भाग जाते हैं वो कंकड़। उसने कहा आज मैं बताऊंगा की देह और आत्मा दोनों अलग-अलग कैसे होते हैं। कार से एक बार अपने शिष्यों के साथ जा रहे थे। पहले से इनको मालूम था कि मैं मरने वाला हूँ। कार का एक्सीडेंट हुआ पेड़ से। बाकि सारे बच गए, गुरजिएफ डॉक्टर के पास लेजाए गए, गुरजिएफ बोले चिंता मत करो मैं उपदेश दूंगा। डॉक्टर बोले कि आपरेशन करना होगा। गुरजिएफ बोले तुम काटते सिलते रहना। हमारे शिष्य हैं मैं उनको उपदेश दूंगा। आर्मेनिया की घटना है। शिष्यों को बोले वो कि देखो मैं स्वस्थ हूँ न मैं साक्षी भाव से मृत्यु को देख रहा हूँ। शरीर के कर्मों का साक्षी होना चाहिए। तुम कर्म करो बस चिंता क्यों करते हो। वो बोले देखो मैं साक्षी भाव से देख रहा हूँ मृत्यु को। चेतना को शरीर को कैसे अलग-अलग भाव से देखते हैं ये जानना जरूरी है। और फिर इसके बाद शरीर छोड़ दिये।

- **मृत्यु को समझने के लिए साक्षी भाव का अभ्यास करना चाहिए।**
- रायपुर में रामकृष्ण मिशन आश्रम है। स्वामी आत्मानंद जी थे। जीप से वह रायपुर जा रहे थे। पहले कोई शिष्य जीप चला रहा था उन्होंने ड्राइवर से कहा कि अब जिस तुम चलाओ। फिर ड्राइवर जीप चलाने लगा और शिष्य पीछे बैठ गया। स्वामी जी जीप में विवेक चूड़ामणि निकली और पाठ किया। शिष्यों को बताया कि प्रारब्ध कर्मों को भुगतना पड़ता है। अगर कुछ हो जाये हमको तो तुम लोगों को क्या क्या करना है कैसे कैसे करना है नोट करलो अपनी नोटबुक में। सभी स्वामी जी की बातों को नोट किये। सबसे पूछा नोट कर लिए सब बोले हां। क्या होने वाला है उस समय कुछ नहीं बताए। नोट करा कर वो अपना ध्यान एकाग्र करने लगे और गहन ध्यान में गए साथ ही मन में विवेक चूड़ामणि का श्लोक बोलते गए। इसी बीच एक ट्रक आया और जीप को उड़ा दिया। बाकि सब बच गए केवल स्वामी जी की मृत्यु होगयी।। ओंकार बोलते हुए चले गए।
- **मृत्यु भी एक कला है।** चीखने-चिल्लाने और रोने से कुछ नहीं होता प्रारब्ध घट कर रहता है।
- तपस्वी जीवन जी लें तो प्रारब्ध क्षय होते जाता है।
- **कर्म का मल तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान से ठीक किया जाता है।**
- शरीर के लिए तप, मन के लिए स्वाध्याय, आत्मा के लिए ईश्वर प्राणिधान।
- नाड़ियों में प्रकाश होता है और चेतना के बहिर्गमन का रास्ता खुलता है।
- नानक दुखिया सब संसार, सो सुखिया सब राम आधार। जिन्होंने राम का आधार लिया सब सुखी है बाकी दुखी।
- भगवान कहते हैं जो अंतकाल में जो मुझे स्मरण करता है वह मुझे ही प्राप्त होता है।
- मृत्यु जीवन का निष्कर्ष है। हमने कितनी नाड़ी शुद्धि की, कितना चित्त शुद्ध किया, तप किया, जो भी किया उसका निष्कर्ष मृत्यु है।
- **अगर हम सर्वभाव में भगवान का स्मरण कर सकें, उनके सर्वभाव से शरीर छोड़ सकें तो इससे ज्यादा सुखद जीवन का कोई निष्कर्ष नहीं हो सकता।**
- **इति नवरात्र साधनः सम्पूर्णः।**

----- ॐ शान्ति -----

Watch Audio/Video Discourse of this class on YouTube.

Visit us on you tube – [shantikunjvideo](https://www.youtube.com/shantikunjvideo)

www.awgp.org | www.dsvv.ac.in